(8) ✓

Q Write an essay on Vaisnavism in South East Asia.

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति नवतरु की भाँति दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों में विकसित हुई थी तथा सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रों में इसकी धारनाएं फैलने लगी थी। पुरातात्विक अवशेषों, प्राप्तलेखों तथा चीनी स्त्रोतों से उद्धृत वृतान्तों के आधार पर हम केवल इस संस्कृति की रुपरेखा ही खींच सकते हैं विस्तृत रुप से सांस्कृतिक इतिहास के लिए सामग्री पर्याप्त नहीं है। धार्मिक दृष्टिकोण से यह प्रतीत होता है कि ब्राह्मण धर्म ने अपने वैदिक तथा पौराणिक रुप में इन द्वीपों में प्रभाव स्थापित कर लिया था। इस प्रकार हमें दक्षिण पूर्वी एशिया में वैष्णव धर्म के जन्म तथा विकास के विषय में सम्यक् अध्ययन के लिए प्रत्येक देश में पाये गये पुरातात्विक अवशेष तथा अन्य स्त्रोतों का अलग - अलग अध्ययन करना पड़ेगा।

मलाया तथा इन्डोनेसिया के अवशेषों को यदि हम देखते हैं तो हमें हिन्दू धर्म के बहुत से अवशेष प्राप्त होते हैं, जावा तथा बोर्नियो में ब्रह्मा, शिव, गणेश, नन्दी, स्कन्ध तथा महाकाल की मुर्तियाँ मिली हैं। साकार रुप में विष्णु शिव तथा अन्य देवी - देवताओं की उपासना का संकेत से प्रतीत होता है कि हिन्दू धर्म के पौराणिक अंग ने भी वहाँ स्थान बना लिया था। मलाया में शैव धर्म के अलावा विष्णु के पद चिह्नों, इन्द्र तथा उसके ऐरावती हाथी का उल्लेख से प्रतीत होता है कि भारतीय देवताओं से सम्बन्धित कथा भी इन द्वीपों में पहुंच चुकी थी। मध्यजावा भी पश्चिमी जावा की भाँति ब्राह्मण धर्म से प्रभावित हो चुका था। इस तरह जितने पुरातात्विक अवशेष वहाँ पर उपलब्ध हैं उसे देखने से यही पता चलता है कि वैष्णव धर्म का प्रभाव भी वैष्णव धर्म के साथ-साथ अन्य धर्म जैसे ब्राह्मण धर्म, बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म भी एक साथ पोषित हुए थे।

जावा-चंपा मलाया तथा इन्डोनेसिया के बाद चम्पा के धार्मिक जीवन को यदि हम देखते हैं तो वहाँ का धार्मिक जीवन भी भारतीय परम्परा के आधार पर ही था। यद्यपि बौद्ध धर्म का प्रवेश यहाँ ४ थी शताब्दी में ही हो चुका था। इत्सिंग के मतानुसार मोचान के लेख से संकेत होता है। पर शैव मत और उसके अंतर्गत भद्रेश्वर स्वामिन की उपासना ही राजकीय धर्म माना जाता था। शिव के अतिरिक्त विष्णु, ब्रह्मा तथा अन्य ब्राह्मण देवता की भी पूजा होती थी। भद्रवर्मन द्वारा स्थापित भद्रेश्वर की मूर्ति और उनका मंदिर चम्पा के इतिहास में विशेष स्थान रखता है। इस धार्मिक जीवन के प्रमुख अंग में शिव उनकी उपासना तथा स्वरूप शैव देवी देवता, विष्णु तथा वैष्णव मत वैष्णव देवी-देवता, ब्रह्मा और त्रिमूर्ति, ब्राह्मण मत से सम्बन्धित अन्य देवी देवताओं को बौद्ध धर्म से सम्बन्धित किया गया है।

शैव मत प्रधान होते हुए भी वैष्णव मत को चम्पा के धार्मिक जीवन में व्यक्तिगत प्रभाव स्थापित करने में अधिक सफलता मिली। कुछ लेखों में विष्णु की उपासना की चर्चा की गयी है। विष्णु को अन्य नामों से सम्बोधित किया गया है। जैसे पुरुषोत्तम नारायण, हरि, गोविन्द, माधव आदि। संसार के पालक रूप में वे आदि अन्त से परे माने गए हैं। (भागवत: पुरुषोत्तमस्य विष्णोर्वारदे;)

चतुर्बाहु धारी नारायण को क्षीर सागर में शेषनाग की सज्जा पर विश्राम करते तथा असुर और मुनियों द्वारा उपासना करने का उल्लेख इन्द्रवर्मन के ग्लै-लमोव के लेख में मिलता है। इसी लेख में विष्णु के गोवर्धन पर्वत को उठाने का मधुकैभ, असुर केशि, पारखण, अरिष्ठ तथा प्रलम्ब को नष्ट करने का भी उल्लेख है।

चम्पा के कुछ शासकों ने अपने को विष्णु

का अवतार भी माना है। वराऊ-स्थल के लेख में जयहरि-वर्मन को विष्णु का अवतार कहा गया है और उनके पुत्र श्री जय हरिवर्मन शिवानन्द की कीर्ति राम और कृष्ण से भी आगे बढ़ गयी थी। चम्पा में विष्णु की चतुर्बाहु वाली मूर्तियाँ भी मिली हैं। उनके हाथों में गदा, पदम, चक्र और शंख दिखलाए गए हैं और वे जनेऊ पहने हैं। इसके अतिरिक्त गरुण पर आसीन तथा मैसोन के मंदिर पर अनन्त शय्या विष्णु की मूर्तियाँ भी मिली हैं। वासुकी की अनन्त शय्या पर विष्णु लेटे हैं और उनकी नाभि से कमल निकला है जिसपर ब्रह्मा ध्यानावस्था में बैठे दिखाए गये हैं। गोवर्धन उठाते हुए भी विष्णु की मूर्ति मिली है।

पदमा और श्री के नाम से लक्ष्मी का उल्लेख भी चम्पा के लेखों में मिलता है। वहाँ पदमा ये अपनी विचलित (चंचला) अवस्था के लिए प्रसिद्ध थीं। इन्द्रवर्मन तृतीय के एक लेख में उनकी तुलना शौर्य के कारण विष्णु से की गयी है। पर वहाँ उनके चंचल रूप का वर्णन नहीं है। (चम्पा भमिर्नलक्ष्मीव) चम्पा में लक्ष्मी की पूर्ति का भी एक उदाहरण है। पहले शम्भुवर्मन ने इसकी स्थापना की थी। उसके बाद में पुनः सम्राट विक्रान्त वर्मन ने उसे स्थापित किया। लक्ष्मी की कई मूर्तियाँ भी चम्पा में मिली हैं। डोंग-डुओंग मंदिर की कढ़ौटेदार डाटों में भी लक्ष्मी की प्रतिमाएँ अंकित हैं। वे दो हाथियों के बीच बैठी हैं और उनपर वे अपनी सूँड़ से जल छिड़क रहे हैं।

विष्णु के वाहन गरुड़ से चम (चम्पानिवासी) अनभिज्ञ नहीं थे। वह विष्णु के साथ वाहन रूप में तथा स्वतन्त्र रूप में भी दिखाया गया है। चम्पा में पक्षी के मुख और सिंह के शरीर के रूप में गरुड़ दिखाया गया है। इसके हाथ में सर्प भी है।

चम्पा के इतिहास में विष्णु और शिव की प्रधानता अलग - अलग समय पर रही। फामोतिये के मतानुसार 7वीं शताब्दी के बाद चम्पों का झुकाव विष्णु की ओर होने लगा। शंकर नारायण के रूप में शिव-विष्णु का सम्मिश्रण भी हुआ। जिसमें आधी शिव की मूर्ति और आधी विष्णु की है पर ऐसी कोई मूर्ति नहीं मिली है।

चम्पा में त्रिमूर्ति के ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के अतिरिक्त अन्य ब्राह्मण देवताओं की भी उपासना की जाती थी। (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति) की भावना के अन्तर्गत सभी देवता मनुष्य को भवसागर से पार लगा सकते थे। इन्द्रवर्मन द्वितीय के डोंग दुओंग के बौद्ध लेख में इन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु, वासुकी शंकर ऋषि, सूर्य, चन्द्र, वरुण, अग्नि तथा कुछ की उपासना का उल्लेख है। वैष्णव धर्म के साथ-साथ हिन्दू धर्म में खासकर शैव धर्म का अधिक बोलबाला था फिर भी वैष्णव धर्म को राजकीय समर्थन अच्छी तरह मिला था जो कि चम्पा के पुरातात्विक अवशेष को देखने से पता चलता है। इस तरह देखते हैं कि चम्पा में भी अन्य दक्षिण पूर्वी देशों के समान वैष्णव धर्म का प्रचार कम नहीं था।

मलाया, इन्डोनेशिया और चम्पा में बहुत से ऐतिहासिक पुरातत्व वैष्णव धर्म के सम्बन्ध में तो मिला ही है। परन्तु जब हम कम्बुज देश के कला तथा ऐतिहासिक पुरातत्व अवशेषों को देखते हैं तो हमें हरेक स्थान पर वैष्णव धर्म के प्रचार का भान होता है। भारतीय संस्कृति और धर्म कम्बुज देश में समान रूप से फैला जिसमें वैष्णव धर्म का विकास बहुत अधिक हुआ। जिसे हम सूर्यवर्मन प्रथम तथा द्वितीय के अंकोर वाट तथा अंकोरथाम की इमारतें और मंदिरों को देखने से जानते हैं।

कम्बुज देश मे वैष्णव धर्म से सम्बन्धित सामग्रियों को देखने से हमें पता चलता है कि दक्षिण पूर्वी एशिया के दूसरे देशों में भी उसका स्वरूप करीब - करीब समान ही था। परन्तु कुछ न कुछ अन्तर अवश्य पड़ना ही चाहिए। यह स्वभाविक ही है।

विष्णु की उपासना का उल्लेख कम्बुज के कई लेखों में की गई है तथा उनको वासुदेव, माधव हरि, नारायण, कृष्ण, पद्मनाभ, त्रिविक्रम, इत्यादि नामों से संबोधित किया गया है। विष्णु के इन सब नामों का उल्लेख चम्पा में भी मिला है। कम्बुज के एक प्राचीन लेख में गुणवर्मन द्वारा विष्णु देवता की मूर्ति के प्रति दिए हुए दान का उल्लेख है और इसे स्वामिन कहा है। जयवर्मन की महिषी कुलप्रभावती ने कुरङ्गनगर में जहाँ ब्राह्मण रहते थे, विष्णु देवता की मूर्ति स्थापित की थी। जयेन्द्रवर्मन के पुत्र अमृतगर्भ ने ८८३ में हरि के एक मंदिर की स्थापना की। सूर्यवर्मन के समय के शक सं ८६३ के लेखों में गरुड़ पर बैठे कृष्ण की मूर्ति का उल्लेख है। कम्बुज के एक मंदिर में विष्णु को वामन रूप में तीन पगों में संसार को नापते हुए चित्रित किया गया है।

हम देखते हैं कि काल और दूरी ब्राह्मण धर्म, विचार और संस्कृति को कम्बुज देश में पहुँचने तथा विकसित होने में बाधक न सिद्ध हुई। यद्यपि शैव मत राजकीय धर्म था फिर भी वैष्णव धर्म यहाँ पर प्रचलित रहा। शिव और विष्णु की युगल मूर्ति स्थापित की जाती थी। इसकी चर्चा मैं पहले ही कर चुका हूँ। अंकोरवाट में भी प्रवेश द्वार से अन्दर जाते ही एक लम्बी गैलरी है जिसमें विष्णु

तथा यम से सम्बन्धित कथानक चित्र अंकित है। इस तरह हम देखते हैं कि दक्षिण-पूर्वी एशिया के अन्य देश यथा मलाया, इंडोनेशिया तथा चम्पा की तरह कम्बुज देश में भी वैष्णव धर्म का प्रचार था।

इस तरह दक्षिण पूर्वी एशिया के विभिन्न देशों के सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक अध्ययन के बाद उसकी विशेषतायें सामने आ जाती है। जहाँ तक वैष्णव धर्म का सम्बन्ध है दक्षिण पूर्वी एशिया के सभी देशों में इसके पुरातात्विक सामग्री पाये जाते हैं जिसके रूप में अन्तर पड़ता है इस प्रकार वैष्णव धर्म से सम्बन्धित सामग्री यह बात साफ प्रकट करती है कि वैष्णव धर्म प्रायः दक्षिण पूर्वी एशिया के हरेक देशों में वर्तमान था। जहाँ तक रूपान्तर का प्रश्न है, रूपान्तर का यह अर्थ होता है कि कृष्ण को किसी देश में कृष्ण अथवा माधव या अन्य देशों में मधुसूदन या गोवर्धन के नाम से पुकारा गया हो यह काम थोड़ा कठिन अवश्य है कि इतर भारत के हरेक देशों में पाये गये पुरातात्विक अवशेषों का सम्यक् अध्ययन कर इस धर्म की विशेषता को प्रकट किया जाय परन्तु इसमें भी संदेह की गुंजाइश नहीं है कि सभी देशों में इसका रूप समान था,